।। श्री कुंथुनाथ जिन पूजन ।।

रचियता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(छंद रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थंकर पावन ।
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

(दोहा)

हे जिनेश श्री कुंथु जिन, नमूं त्रियोग सम्हार ।
आओ तिष्ठो मम हृदय, धर्म तीर्थ करतार ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत।

(वीर छंद)

तन को चेतन धर्म कर्म को मान बना मैं मतवाला ।
भला किसी को बुरा कहा रे ! पीकर मोह-मधु-प्याला ।
मोहमहामद नाश करो जल लेकर चरणों में आया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकूल कहे प्रतिकूल कहे परद्रव्यों में यों भेद किया ।
आकुल व्याकुल मैं बना रहा नित काषायिक हो तपित जिया।
प्रभु भव-भव का आताप हरो मैं मलयज चरणों में लाया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग क्षणिक पर्याय क्षणिक टिक रखने की नित चाह रही ।
त्रैकालिक निज शाश्वत सत्ता से अनजान रहा परवाह नही ।
अक्षयपद तुमसा पाने को प्रभु अक्षत चरणों में ले आया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेद्रिय मन के वश होकर पर विषयों में आसक्त रहा ।
निज ब्रह्मभाव मैं पा न सका प्रभु जो तुमने अव्यक्त कहा ।
चिद्पुष्पों से अन्तर महके दिवपुष्प चरण में ले आया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ पा लेने की इच्छा पर से आकुलता की जननी है ।
यह क्षुधातृषा केवल दुखमय परिणाम व्यर्थ की करनी है ।
रे अनुभव अमिरस पान करुँ नैवैद्य चरण में ले आया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जग के ज्ञाता त्राता हो मैं तम से त्रसित रहा स्वामी ।
तुम केवलधर मैं मतिहीन जो दिखता कहता अभिरामी ।
यह मोह यामिनी निपट नाश हो दीपक चरणों में लाया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में जड़ चेतन सब सुंदर रे मोह अकेला दूषण है ।
विकृत विभाव से रहित तुम्हारी परिणति पावन भूषण है ।
विध्वंस करो वैभाव्य प्रदूषण धूप चरण में हूँ लाया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःख मुक्ति हेतु परमुख लखता आकुलता ही फल पाता ।
क्षण-क्षण विषयों को बदल-बदल सब यत्न अरे निष्फल जाता।
निर्वाण महाफल पाने को प्रभु चरणों में दिवफल लाया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल तुम्हारा वैभव निज आत्मसाधना जनित प्रभो ।
निज दर्शन बोध चरण पथ तुमसा ही केवल है स्वहित विभो।
प्रभुवर अनर्घ्य पद पाने को बहुमोलक अर्घ्य बना लाया ।
हे कुंथुनाथ जिनराज आपको शरणभूत जग में पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छंद धत्तानंद)

तीर्थंकर वंदें नित अभिनंदें पद अरविंदे शीश धरें ।
पांचों कल्याणक समकित दायक मोद बधायक भक्ति करें।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद रोला)

सर्वार्थसिद्धि तज सावन कृष्ण दशम को आए।
मात श्रीमती सोलह सपने लख हरषाए ।
धनपति नभ से करे रत्नवर्षा बहुभारी ।
नगर हस्तिनापुर में हरषे सब नर नारी ।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख प्रथम दिन भू अम्बर सब हर्षा ।
प्रभु जन्मोत्सव मेरु शिखर पांडुक जल वर्षा ।
सुरपति नयन सहस कर तांडव नाच रचाया ।
सूर्यसेन घर आंगन में बहु मोद मचाया ।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षटखंड छोड़ वनखंड अखंड निजातम ध्याने ।
चले कुंथु निष्काम काम तज तीर्थ समाने ।
सित वैशाख प्रतिपद जड़पद परपद त्यागे ।
सुर नर लौकांतिक कर उत्सव बहु अनुरागे ।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत्र तीज को बीज-ज्ञान फल केवल पाया ।
समवसरण में होय विराजित अमि बरसाया ।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य नंत मय मुद्रा प्यारी ।
सर्व घातिया कर्म रहित अर्हत् पद अविकारी ।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित वैशाख एक एकपद सिद्ध अनुपम ।
हुए अचल ध्रुव ध्रुव-आलम्बी नित्य निरुपम ।
अहो ज्ञानधर शिखर लोक पर शिखर पौरुषी ।
नही देह मन वचन नही अब कर्म अंकुशी ।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

कर्म चक्र को काटकर, धर्म चक्र धरनार ।
निष्काम अखंडित तीर्थ को, वंदन बारम्बार ।

(छंद चौपाई)

जय जय कुंथुनाथ जिनराया, जय जय मोह विभाव पलाया ।
जय परिणति परिपूर्ण स्वरुपा, जय सर्वज्ञ तिहुं जग भूपा ।

जग के कण-कण क्षण-क्षण ज्ञाता, तुम जिनवर शिवमार्ग प्रदाता ।
जग को वे सब तत्त्व बताए, जो शिव हेतु प्रयोजन पाए ।

जीव अजीव बंध रु आश्रव, संवर निर्जर मोक्ष कहे तव ।
इनकी श्रद्धा ज्ञान यथारथ, जब होता खुलता मुक्तिपथ ।

जीव चेतनामय तिहुंकाला, दर्श ज्ञान उपयोग विशाला ।
सुख का दुख का वेदन करता, श्रद्धा थिरता द्विविध विचरता ।

उपादेय आश्रय हित पूरण, श्रद्धा कर हो मोह विदूरण ।
ज्यों-ज्यों थिरता बढ़ती जाती, शिवतिय निकट निकट त्यों आती ।

पुद्गल धर्म अधर्म काल नभ, है अजीव ये ज्ञेय कहे सब ।
सब निज गुण परिणाम संभारे, निज-निज सत्ता रहते न्यारे ।

भाव विकारी जड़ रज आना, आश्रव भाव दरब परमाणा ।
भाव जीव को दुख उपजाते, करम निमित्त मात्र कहलाते ।

इन भावों संग जुड़ना रुकना, कर्म जीव-प्रदेश ठहरना ।
बंधन भाव द्रव्य यों जानो, दुखकर दुःख-निमित पहिचानो ।

भेदज्ञान कर निज अनुभूति, सर्व गुणांश स्वभाविक वृत्ति ।
निर्मल परिणति भावित संवर, द्रव्य कर्म-आश्रव हत सत्वर ।

शुद्ध भाव का पल-पल बढ़ना, संचित जड़कर्मों का झड़ना ।
भाव द्रव्य निर्जर हितकारी, मुक्तितिय सन्निकट निहारी ।

पूर्ण शुद्ध परिणति हो जाना, जड़कर्मों का सब झड़ जाना ।
भाव द्रव्य यह मोक्ष महाना, प्रकट हेतु आदेय प्रधाना ।

संवर निर्जर देश प्रमाणों, आश्रव बंध हेय नित जानो ।
यों तत्वारथ जो सरधाने, धर रत्नत्रय शिवसुख ठाने ।

(धत्तानंद)

तीर्थंकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।
तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सप्त तत्व सरधान कर, थिरता निज में धार ।
कुंथुनाथ पथ पर चलें, होवें भवदधि पार ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।